कांग्रेसका सुधार

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १२ — सम्पादक – किशोरलाल मशरूवाला — अंक २३

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ८ अगस्त, १९४८

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी ही है

मैं जब यह लिखने बैठा, तो सोचने लगा कि अिसका शीर्षक क्या रखा जाय। 'हमारी राजभाषा' यह अधूरा लगता है। और आज तो यह सही भी नहीं होगा। आज हमारी राजभाषा अंग्रेजी है। वह राष्ट्रभाषा नहीं है। और राजभाषाका दायरा हमेशा राष्ट्रभाषासे छोटा ही रहेगा। आजकल 'संघभाषा'का प्रयोग शुरू हुआ है। 'हिन्दी संघ', 'अिण्डियन यूनियन' नाम अगरचे हमारे देशको दिया गया है, लेकिन मुझे वह कतअी पसन्द नहीं। अिसमें अलगावकी बू आती है। 'संघ' शब्द या तो रियासती प्रजाओं और गैर-रियासती प्रजाओंके सम्मेलनका सूचक हो सकता है या मद्रास, बम्बअी, मध्यप्रान्त वगैरा प्रान्तोंके सम्मेलनका सूचक हो सकता है। कुछ भी हो। 'संघ' शब्द है तो मिलापका सूचक, लेकिन अुसके साथ साथ अलगावका भान हुअे बिना नहीं रहता। मुझे तो 'हिन्द', 'भारत', 'हिन्दुस्तान' ये शब्द ज्यादा पसंद हैं। अिनमें हमारी अखण्डता कायम रहती है। अभी अभी पाकिस्तानके निर्माणसे 'हिन्दुस्तान' शब्द कुछ अप्रिय हो गया है, अिसलिअे ओछे खयालके लोग 'हिन्दुस्तान' के बजाय 'हिन्दुस्थान' शब्दका प्रयोग जानबूझ कर करते हैं, और अिस तरह हमारे देशको सिर्फ हिन्दुओंका ही देश मनवानेकी कोशिश करते हैं। (यहाँ पर यह कह दिया जाय कि महाराष्ट्री लोग आम तौर पर 'हिन्दुस्थान' ही लिखते हैं। लेकिन वे अूपर बताये हुअे खयालसे अैसा नहीं करते। वे तो 'गुजरात'को 'गुजराथ' और 'गुजराती'को 'गुजराथी' ही कहते और लिखते हैं। अुनकी ज़बानका शायद यह स्वभाव है।)

हिन्दुस्तानीको संघभाषा भी नहीं कहा जा सकता। क्योंकि वह सिर्फ हिन्दी संघमें ही नहीं बोली जाती। पाकिस्तानमें भी वह बरती जाती है। संजोगवश हमारे देशमें दो राजकीय हुकूमतें क़ायम हुअी हैं। अिससे न तो दो दिल होने चाहियें, न दो राष्ट्र। दो हुकूमतें होते हुअे भी हमारा राष्ट्र काश्मीरसे कन्याकुमारी तक और कराचीसे सदिया तक अेक ही है। और अीश्वरने चाहा, तो अेक ही रहेगा। अिसलिअे अिस महान देशकी भाषाके लिअे 'राजभाषा' या 'संघभाषा' के बनिस्बत 'राष्ट्रभाषा' शब्द ज्यादा सही होगा।

(२)

हमारी राष्ट्रभाषाका नाम क्या रहे? जब तक पाकिस्तानका निर्माण नहीं हुआ था, तब तक कुछ लोग दूसरी तरह सोचते थे। अब पाकिस्तानसे कोअी वास्ता न मानकर वे कहते हैं — "हमारा देश 'हिन्द' है, अिसलिअे हमारे देशकी ज़बानका नाम 'हिन्दी' होना चाहिये।" अेक ज़माना था जब हिन्दी शब्द अुसी अर्थमें समझा जाता था, जिसमें कि आज 'हिन्दुस्तानी' समझा जाता है। लेकिन हिन्दीके प्रेमी हिन्दीको अुसकी जगहसे घसीटते घसीटते यहाँ तक ले आये हैं कि अुसके मानी अब होने लगे हैं: नागरी लिपिमें लिखी जानेवाली संस्कृत शैलीकी ज़बान। अिसलिअे देशके लिअे 'हिन्द' शब्द जितना प्यारा लगता है, अुतना देशकी ज़बानके लिअे 'हिन्दी' शब्द प्यारा नहीं रहा। अैसा कहा जा सकता है कि 'हिन्दी'के मुक़ाबले 'हिन्दुस्तानी' शब्द ज्यादा पसन्द किया जायगा। हमारे देशकी ज़बानके लिअे 'हिन्द' परसे अेक दूसरा शब्द 'हिन्दवी' चला था। लेकिन वह अब नामशेष हो गया है। अुसके फिर जिन्दा होनेकी कोअी अुम्मीद नहीं। अिसलिअे 'हिन्दुस्तानी' शब्द ही ज्यादा पसन्द किया जायगा। लेकिन अगर कोअी हिन्दुस्तानीके मानी अुर्दू करता है, तो वह ख्वाब देखता है, और वह अुसका ख्वाब ही बना रहेगा। यह कअी बार साफ कर दिया गया है कि हिन्दुस्तानी वह ज़बान है, जिसमें हिन्दी और अुर्दूका कुदरती मेल है।

ज़बानके रूपके बारेमें और नामके बारेमें जो मतभेद है, अुससे कहीं ज्यादा मतभेद अुसकी लिपिके बारेमें है। यह हक़ीकत है कि हिन्दुस्तानी आज नागरी और अुर्दू दोनों लिपियोंमें लिखी जाती है। लेकिन आज दूसरेको अुसकी जगह दिखानेकी अेक खतरनाक हवा चली है। काश कि सब अपनी अपनी जगह पहचान लें! न नागरी अुसकी जगहसे हटाअी जा सकती है, न अुर्दू कानूनके जरिये मिटाअी जा सकती है। अगर तामिलनाड़में जाकर कोअी तामिल लिपिकी अपूर्णता दिखाकर अुसे हटानेका प्रचार करेगा, तो अुसकी कोअी सुनेगा नहीं। मैं बड़ी नम्रतासे कहूँगा कि आजका अवसर लिपियोंके गुण-दोष और अुनके दायरेकी चर्चा करके अेक दूसरेकी तुलना करनेका नहीं है। जैसी भी हालत है, अुसे स्वीकार करके आज संगठित रूपसे आगे बढ़नेकी ज़रूरत है। अलबत्ता, जिसे अपनी लिपि प्यारी है, वह अपनी लिपिको संपूर्ण बनानेकी कोशिश करता रहे, यह कहनेकी जरूरत नहीं है।

(३)

आज राष्ट्रभाषा प्रचारके क्षेत्रमें काम करनेवाले बहुतेरोंकी निगाहें विधान-सभाके होनेवाले फैसले पर गड़ी हुअी हैं। अिसलिअे विधान-सभा किस तरह बनी है, अुसका दायरा क्या है, किस चीज़का अुसे निर्णय करना है, वगैरा बातोंपर सोचना ज़रूरी है।

विधान-सभामें विधान बनानेकी विद्या जाननेवालोंको सभासद चुना गया है। अिसलिअे ये सब किसी खास मतकी संस्थाके प्रतिनिधि हों, अैसा ज़रूरी नहीं माना गया। जैसे डॉ० अंबेडकर और डॉ० श्यामाप्रसाद मुकर्जी कांग्रेसकी तरफसे भेजे गये हैं, लेकिन वे कांग्रेसके सिद्धान्तोंको पूरी तरह माननेवाले नहीं हैं। दूसरे अैसे हैं, जिन्हें आबादीकी संख्याके प्रमाणमें और लोकप्रियताके कारण चुनना ज़रूरी माना गया, चाहे वे विधान बनानेकी कलाके विशेषज्ञ न भी हों। अिस तरह विधान-सभा राष्ट्रभाषाका निर्णय करनेवाली अथवा अुसपर शास्त्रीय ढंगसे चर्चा करनेवाली संस्था नहीं है। ज्यादासे ज्यादा वह राजभाषाके बारेमें निर्णय कर सकती है। लेकिन अिसमें भी अुसे जनतासे निर्णय लेना चाहिये। कहा जाता है कि विधान-सभाके सभासदोंमें बहुतेरे अंग्रेजी जानते हैं, लेकिन सब हिन्दुस्तानी नहीं समझते, खासकर दक्षिण भारतके लोग। अिससे अुलटे, हिन्दके ज्यादातर लोग हिन्दुस्तानी समझते हैं और अंग्रेजी तो सात फी सदी लोग भी नहीं समझते।

www.vinoba.in

अिसलिअे अगर विधान-सभामें यह तय होता है कि विधान अंग्रेजीमें मंजूर किया जाय, तो वह तीस चालीस करोड़ लोगोंकी नुमाअिन्दगी नहीं करती। अितना ही नहीं, वह आजके भारतवासियोंके साथ और भविष्यकी पीढ़ियोंके साथ ज़बरदस्त अन्याय करती है। अिसका अर्थ और नतीजा तो यही हो सकता है कि राजकाज चलानेका ठेका अंग्रेजी जाननेवालोंका ही रहेगा। अिससे बढ़कर अन्याय और क्या हो सकता है? अगर जनताकी राय ली जाय, तो वह अंग्रेजीके पक्षमें कभी नहीं होगी। अिसलिअे जिन लोगोंके लिअे विधान बनाया जाता है, वह अंग्रेजीमें हरगिज नहीं हो सकता; वह तो हिन्दुस्तानीमें ही होना चाहिये।

दलील यह की जाती है कि हमारी देशी भाषायें अितनी समृद्ध नहीं हैं, जितनी अंग्रेजी है। अंग्रेजीमें बारीकीसे खास अर्थ बतानेवाले जो शब्द हैं, अुनके लिअे हमारी ज़बानोंमें शब्द नहीं मिलते। और राजका मामला है। कभी कभी तो अैसे शब्दोंपर ही महत्वके निर्णय किये जाते हैं।

ठीक है। लेकिन क्या अंग्रेजी राजके पहले अिस प्राचीन देशमें अच्छे राज चले ही नहीं? जहाँ झूठको सच साबित करना है, वहीं युक्ति, प्रयुक्ति और अटपटेपनकी ज़रूरत है। आजकल अंग्रेजी राजके असरमें लोगोंके लिअे अिन्साफ पाना अितना पेचीदा और मुश्किल हो गया है कि बिना वकीलके अदालतमें काम ही नहीं चल सकता। और अगर स्वराजमें भी विधान अंग्रेजीमें मंजूर हुआ, तो अिन्साफ माँगनेवाला यह नहीं समझ सकेगा कि न्यायाधीश किस तरह अिन्साफकी कार्रवाअी कर रहा है और वकील किस तरह बहस कर रहा है। आखिर यह लाचारी कहाँ तक बरदाश्त की जाय और क्यों?

आरम्भमें कठिनाअियाँ ज़रूर रहती हैं, लेकिन आरम्भ करनेपर ही वे दूर की जा सकती हैं। आरम्भ हो भी तो।

दूसरी दलील यह की जाती है कि सही कुछ भी हो, हकीक़त यह है कि जब विधान पेश होगा, तब अुसकी हर कलमपर बहस होगी और अुस पर राय दी जायगी। लेकिन अगर कुछ समासद हिन्दुस्तानी बिलकुल समझते ही नहीं, तो वे अपनी राय कैसे दे सकेंगे? अिसके लिअे व्यावहारिक हल क्या है?

जहाँ चाह वहाँ राह। हम अपने सिर्फ अंग्रेजी जाननेवाले देश सेवकोंकी सेवा खोना नहीं चाहते। अिसलिअे पहले विधानकी कलम हिन्दुस्तानीमें पढ़ी जाय और तुरन्त अुसका अनुवाद अंग्रेजीमें पढ़ा जाय। अिसे समयकी बरबादी न कहा जाय, बल्कि राष्ट्रके गौरव और राष्ट्रकी ताक़त बढ़ानेके लिअे ज़रूरी समझा जाय।

अन्तमें दो शब्द मैं राष्ट्रभाषा प्रचारके क्षेत्रमें काम करनेवाले अपने साथियोंसे कहना चाहता हूँ। हमारा मकसद अूँचा है, हमारा दायरा विशाल है। राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी राजभाषा तो बन सकती है। लेकिन वह बनेगी तब बनेगी। वह तो आज भी अुससे ज्यादा अूँचे आसन पर विराजमान है। वह आसन है चालीस करोड़ लोगोंके हृदय। हिन्दुस्तानी न तो प्रान्तभेदको जानती, न अुसके लिअे हिन्दी संघकी सीमाका बन्धन है। वह अुससे बाहर पाकिस्तानमें भी फैली हुअी है। अुसकी दोनों लिपियों—नागरी और अुर्दू—के जरिये हमें अुसकी अुपासना करनी है। अुर्दूकी अुपासना हमें अपने पड़ोसी अफ़गानिस्तान, बलूचिस्तान, अीरान, अरबस्तान वगैराके नजदीक ले जायगी। हमें विधान-सभाकी ओर ताकते बैठनेकी ज़रूरत नहीं। हमारे कामका निर्णय वह नहीं दे सकती। वह अुसकी मर्यादाके बाहर है। हमें न केवल अुसके राजकीय क्षेत्रकी सेवा करनी है, बल्कि जीवनके और क्षेत्रों—विज्ञान, तत्त्वज्ञान, साहित्य वगैरा—की भी सेवा करनी है। और वह हम हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अीसाअी सब मिलकर करेंगे। आज हमारे रहनुमा पू० गांधीजी हमारे बीच नहीं हैं। अिसलिअे हमें अुनके दिखाये हुअे रास्ते पर और भी ज्यादा श्रद्धा और लगनसे चलनेकी और आगे बढ़नेकी ज़रूरत है।

वर्धा, १७-७-'४८ अमृतलाल नाणावटी

रचनात्मक काम करनेवालोंकी संस्थायें

डॉ० कैलाशनाथ काटजूने रचनात्मक काम करनेवाले और गांधीजीके रचनात्मक कार्यक्रममें विश्वास रखनेवाले लोगोंके कर्तव्यों पर अपने विचार जाहिर किये हैं। अुन्हें पाठकोंके सामने रखते हुअे मुझे खुशी होती है। ये विचार अुनके अेक खतमेंसे चुनकर दिये गये हैं:

"संचालकों और कार्यकर्ताओंको गंभीरतासे प्रतिज्ञा कर लेनी चाहिये कि वे अपनी प्रवृत्तियाँ चलानेके लिअे न कभी सरकारका आसरा ताकेंगे न अुससे मदद माँगेंगे। वे तो पूरी तरह अपने ही प्रयत्नों पर, अपने ही पैसे या अैसे पैसे पर निर्भर रहेंगे, जो वे अुनके काममें रस रखनेवालोंसे अिकट्ठा कर सकेंगे। किसानके आठ आने या अेक रुपया चन्देसे शुरू करके जितने भी ज्यादा आर्थिक मदद देनेवाले होंगे, अुतना काम ज्यादा कामयाब होगा। मैं खास तौरसे अिस बातको बहुत ही बड़ा महत्व देता हूँ, कारण कि ओहदे और ओहदेवाले लोग तो कुदरतन राजनीतिक और दूसरी सब तरहकी ताकतोंके केन्द्र बन जाते हैं। ओहदेका मतलब है संरक्षण, जिसका मतलब है आर्थिक संरक्षण। यहाँ अेक बड़ा भारी खतरा यह पैदा होता है कि हमारे रचनात्मक कार्यक्रमके काम करनेवाले अिधर केन्द्र शुरू करेंगे और तुरन्त ही अुधर मंत्रियोंके पास मददके लिअे दौड़े जायेंगे। जहाँ अुन्होंने यह किया कि मेरी अपनी धारणा तो यह है कि शायद ही अुनका वह काम सफल हो। मैंने बार बार देखा है कि हमारे आदरणीय मित्र और दूसरे कअी सहयोगी सरकारसे आर्थिक मदद पानेके लिअे व्यर्थ अपनी ताकत खर्च करते रहते हैं और जब वह मदद या तो अनिच्छासे दी जाती है, या वह नाकाफी होती है या अुसे देनेमें कुछ जरूरी सरकारी पाबन्दियाँ लगा दी जाती हैं, तो अुन्हें चिढ़ आती है। सिर्फ अितना ही नहीं, जिस समयसे हमें सरकारी आर्थिक सहायता मिलने लगती है या हम अुसपर निर्भर हो जाते हैं, अुसी समयसे मैं समझता हूँ कि हमारे कामकी नैतिक अपील बहुत कुछ घट जाती है और अुसका लोगोंपर वह असर नहीं पड़ता, जो कि पड़ना चाहिये। मैं सरकारी आर्थिक मदद लेनेके खिलाफ नहीं हूँ, लेकिन मेरी यह पक्की राय है कि अैसे कामोंका खास आधार ज्यादासे ज्यादा गैरसरकारी मदद पर होना चाहिये। वह मदद जितनी आम किसान लोगोंसे मिले, अुतना ही अच्छा। सरकारी मदद तो बिना खोजे, बिना प्रार्थना किये अपने आप आनी चाहिये। असलमें मंत्रीको अिन संचालकोंसे मदद मंजूर कर लेनेके लिअे प्रार्थना करनी चाहिये, न कि संचालक लखनअू या नैनीतालके सेक्रेटरियटमें मंत्रीके दफ्तरमें, या अुसके घर जाकर मदद माँगते फिरें। अैसा होनेपर तो सारी रचना ही बदल जाती है। यदि सरकार रचनात्मक कार्यक्रमको बढ़ाना ही चाहती है, तो यह अुसका काम है कि जिस तरीकेको वह सबसे अच्छा समझे, अुसके जरिये अुसे बढ़ाये। अिसके लिअे मेरे अपने विचार भी हैं। मैं यह तो नहीं बतला सकता कि किस तरह, लेकिन किसी भी तरह गांधीजीने अिस कार्यक्रमको अैसा बना दिया है कि सरकारके जरिये अुसे चलाना नामुमकिन-सा हो गया है। यह कोअी ग्रामोद्योगोंके विकासका ही कार्यक्रम नहीं है, बल्कि असलमें तो वह व्यक्तिके ही विकासका कार्यक्रम है। और वह विकास तभी हो सकता है, जब व्यक्ति या सम्बन्धित दल स्वेच्छासे अुसके लिअे प्रयत्न करे, और अुसके पीछे जड़ सरकारी अंकुश न रहे। अलबत्ता सरकारकी अितनी तो जिम्मेदारी है कि वह जनताके पैसेको ठीक तरहसे खर्च करे और अिसके लिअे अैसे अुपाय, जो अुसे अुचित दिखें, काममें ले। परन्तु कुछ भी हो, मेरा तो यह खयाल है कि ये खास तालीमी केन्द्र अधूरा ही काम करते हैं—वे पूरा काम नहीं करते। सैकड़ों निस्स्वार्थ

www.vinoba.in

और बिलकुल ईमानदार कार्यकर्ताओंके लिअे आदर्श रास्ता तो यही होगा कि वे संगठित हो जायँ और गाँवोंमें फैल कर यह काम करें, और सरकार अुन्हें यह काम बढ़ानेके लिअे अिकट्ठी रकमोंके रूपमें कुछ मदद दे। यह मदद अिस कामके लिअे आवश्यक धनका अेक हिस्सा ही रहेगी।

"जैसे जैसे समय बीतता जाता है, वैसे वैसे अधिक तीव्रतासे मुझे महसूस होनेवाली दूसरी बात है, खुदके आदर्शकी। अिसकी खास कर रचनात्मक कोशिशोंमें बड़ी जरूरत है। मैं समझता हूँ कि गांधीजी अपना चरखेका सन्देश गाँव गाँवमें अिसलिअे नहीं पहुँचा सके कि अुनका व्यक्तित्व बड़ा अजीब था, बल्कि अिसलिअे कि वे खुद बिलानागा रोज कातते थे। मैं अब बड़े दुःखके साथ देखता हूँ कि चरखेकी ताकतमें लोगोंको सच्चा विश्वास नहीं रहा। यदि अैसा विश्वास होता, तो वह व्यवहारमें दिखाअी देता। मैं नहीं जानता कि केन्द्र और प्रान्तोंकी सरकारोंके कितने मंत्री रोज चरखा चलाते हैं। मैं मानता हूँ कि अुनके कन्धोंपर जिम्मेदारियोंका भारी बोझ है। फिर भी मेरा सुझाव है कि यदि चरखेका सन्देश हिन्दके आम लोगोंमें पहुँचाना हो, तो हमारे बड़ेसे बड़े आदमियों और हमारे मंत्रियोंका अपने जीवनमें फिरसे चरखा दाखिल कर दिखाना जरूरी मालूम होता है। बदकिस्मतीसे आजकल सिर्फ अुपदेशोंसे हमारा बहुत काम नहीं बन पाता। गांधीजीने शरीर-श्रमपर जोर दिया है। अुनका आग्रह था कि जो बात हम दूसरोंको करनेके लिअे कहें, अुसे खुद भी करें। मेरी यह बात सिर्फ मंत्रियों या अूँचे अूँचे ओहदेदारों तक ही सीमित नहीं है। यह तो हमारे सारे नेताओं, चाहे वे ओहदोंपर हों या बाहर हों, पर अेक-सी लागू होती है। मैं खुद तो यही सोचता हूँ कि हरअेक कांग्रेस कार्यकर्ताके लिअे, फिर वह नेता हो या अनुगामी हो, यह अेक पवित्र कर्तव्य-सा हो जाना चाहिये कि यदि अुसका रचनात्मक कार्यक्रममें विश्वास है, तो अुसे अिस बारेमें अपनी खुदकी मिसाल कायम करनी चाहिये। अुसे खुद रोज कातना चाहिये और अिस बातको लोगोंमें जाहिर करना चाहिये। अगर वह लोगोंकी सभामें अैसा करे, तो और ज्यादा अच्छा हो। यदि वह ग्रामोद्योगोंको बढ़ाना चाहता है, तो अुसे अपने घरमें ग्रामोद्योगकी चीजें अिस्तेमाल करके आदर्श कायम करना चाहिये — जैसा गांधीजी जीवनभर करते रहे। रचनात्मक कार्यक्रम सिर्फ आर्थिक कार्यक्रम ही नहीं है। यह तो व्यक्तिका कअी तरहसे विकास करनेवाला सर्वव्यापी कार्यक्रम है। यदि मैं अैसा कह सकूँ तो आर्थिक विकास तो अिसके गौण फायदोंमेंसे अेक है, जो कि अिस कार्यक्रममेंसे अपने आप मिलता है। और अगर हम आर्थिक पहलूसे नैतिक पहलूको जुदा कर लेते हैं, और सिर्फ आर्थिक पहलूपर ही ध्यान रखते हैं, तो मुझे लगता है कि अिस जमानेमें, जब कि कअी तरहके दूसरे जनताको अुलझनमें डालनेवाले सिद्धान्त काम रहे हैं, हमारे सिद्धान्तका नाकामयाब होना बहुत सम्भव है।

"गांधीजी कांग्रेसको 'कांग्रेस' शब्दके पुराने अर्थमें खतम कर देना चाहते थे। जहाँ तक राजनीतिका सम्बन्ध है, अुनका खयाल था कि कांग्रेसके रजिस्टरमें हिन्दकी सारी आबादी आ जाती है। मेरा खयाल है कि वे राजनीतिको राजनीतिज्ञों, शासनतंत्रकी पार्टियों और मंत्रि मण्डलोंपर छोड़ देना चाहते थे। रचनात्मक कार्यक्रम अुन्होंने अिस क्षेत्रके कुछ सिपाहियोंपर छोड़ दिया था। लेकिन राजकीय सत्ता आकर्षक होती है। और वह हिन्द-जैसे गुलामी भोगे हुअे देशमें तो और भी आकर्षक बन जाती है। आज जिस आदमीके पास राजनीतिक सत्ता होती है, अुसमें लोगोंको अेक विशेष प्रकारका आकर्षण मालूम होता है। मैं सोचता हूँ कि अपने निस्स्वार्थ सेवकोंके बारेमें जब वे सोचते थे, तो अुन्हें यह भी विचार आता था कि अुनके अैसे सेवक मौजूदा हालतमें अपने जीवनसे, अपने चरित्रकी सच्ची नैतिकतासे और अपनी लगनकी तीव्र निस्स्वार्थतासे तथा जिनके पास राजकीय सत्ता है अुनसे किसी भी तरहका सम्बन्ध रखे बगैर या अुनकी मददपर निर्भर रहे बिना लोगोंमें अपना प्रभाव जमा लेंगे। यदि ये लगनशील कार्यकर्ता किसी सरकारी मदद या संरक्षणपर निर्भर रहे बिना अपने बलपर काम करते रहें, तो मुझे खातरी है कि वे अपने जीवनकी शुद्धतासे, तथा अपने चरित्र और कामकी अूँचाअीसे कामयाबी हासिल कर लेंगे।

"मैं सोचता हूँ कि मैं अेकदम नअी बात नहीं कह रहा हूँ। लेकिन कमी कमी होता यह है कि जो हमें स्पष्ट दिखाअी देता है, अुसीकी हम परवाह नहीं करते। मैं सिर्फ अितना ही चाहता हूँ कि जिस पहलू पर मैंने जोर दिया है, अुसे सावधानीसे खयालमें रखा जाय।

"दुःख और गुलामीकी रातके बाद अब देशमें राजकीय सत्ताका अुजेला हुआ है। अिसलिअे स्वाभाविक ही हर कांग्रेसी अुसका मजा लेना चाहता है और अिस सत्ताका हितकारी अुपयोग करके जनताकी सेवा करना चाहता है। मैं हृदयसे चाहता हूँ कि जो लोग निस्स्वार्थ सेवाके अिस मार्ग पर चलें अुन्हें कामयाबी मिले। अिसके लिअे वे पूरी तरह योग्य हैं। लेकिन ये कार्यकर्ता खादी और दूसरे ग्रामोद्योगोंके विकासके लिअे विविध प्रवृत्तियोंवाली सहकारी संस्थाओं (मल्टीपल कोआपरेटिव्ह सोसायटीज) के संगठनका काम अपने हाथोंमें ले लें, तो मैं अुसे बहुत पसन्द करूँगा। अिन कामोंसे वे गाँववालोंके बिलकुल नजदीकके सम्पर्कमें आयेंगे और अुनकी बहुत बड़ी सेवा कर सकेंगे; कारण कि अिस तरह पूरी पूरी संगठित संस्थाओंको बहुत सावधान और होशियार संचालनकी जरूरत है।"

सेवाग्रामकी रचनात्मक कार्यकर्ताओंकी परिषद हो जानेके बाद अुसी तरहकी परिषदें कअी प्रान्तोंमें हो चुकी हैं। कुछ दिन पहले अिनमेंसे अेक परिषदका संगठन करनेवालोंके नाम अेक पत्र लिखा गया था। अुसमेंसे मैं नीचेका हिस्सा अुद्धृत करती हूँ। पाठक क्षमा करेंगे।

"ये प्रान्तीय परिषदें जरूरी तो हैं, लेकिन अेक-दो भूलोंके बारेमें मैं कार्यकर्ताओंको चेता देना चाहता हूँ। पहली यह है कि परिषद 'सफलतापूर्वक' भर लेनेको ही हम शायद सेवाका अंग मान बैठें और जिला, तहसील वगैराके लिअे भी अैसी अेकके बाद दूसरी परिषद करनेके कार्यक्रम तैयार करने लग जायँ। दूसरी यह है कि सावधानीसे गढ़े हुअे प्रस्तावोंको पास करा लेने और अुनके पक्षमें अच्छे अच्छे लेक्चर झाड़ देनेको ही हम कार्यक्रमकी पूर्णाहुति समझ लें। तीसरी है, हम सरकार और गैरसरकारी अखिल भारतीय संस्थाओंकी ओर हर काममें रहनुमाअी करने और पैसे-टकेसे मदद देनेके लिअे ताकते रहें।

"सरकार — प्रान्तीय या केन्द्रीय — और गैरसरकारी अखिल भारतीय संस्थाओंकी भी अपनी अपनी जगह है, अपने अपने कामके क्षेत्र हैं। लेकिन यदि कार्यकर्ता अुनका बहुत ज्यादा सहारा लेंगे और यदि वे ठीक ठीक काम नहीं कर सकेंगी, तो शायद है सारी संस्थाओंको बैठ जाना पड़े और लोगोंको वह स्वराज्य कभी न मिल पाये, जिसमें सर्वोदय होनेकी खातरी है।

"अिसलिअे मैं कार्यकर्ताओंसे प्रार्थना करूँगा कि वे लोगोंको अपने साथ लें और अुनकी खुदकी प्रेरणासे रचनात्मक कार्यक्रम पूरा करनेमें अुन्हें लगावें। जैसे जैसे आम लोगोंकी कोशिश बढ़ती दिखाअी दे, भले अुसमें सरकार या गैरसरकारी केन्द्रीय संस्थाओंकी ओरसे मदद मिले या न मिले, वैसे वैसे कार्यक्रमके अलग अलग लक्ष्य निश्चित किये जायँ।"

वर्धा, ८-७-'४८
(अंग्रेजीसे)

किशोरलाल मशरूवाला

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

८ अगस्त १९४८

कांग्रेसका सुधार

कुछ पुराने कार्यकर्ता और प्रभावशाली कांग्रेसजनोंने यह सुझाया है कि कांग्रेसको और शासनतंत्रको शुद्ध और निर्दोष बनानेके लिअे श्री राजगोपालाचार्य, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाअी पटेल, मौलाना आज़ाद और दूसरे चोटीके नेताओंको शासनतंत्रसे बाहर आ जाना चाहिये और अपनी जगहोंपर योग्य और अनुभवी लेकिन अपनेसे कम महत्वके कांग्रेसजनोंको रखना चाहिये। बाहर रहकर वे अुसी तरह अिनकी रहनुमाअी करें और अिनपर नियंत्रण रखें, जिस तरह अुन्होंने १९३७ के कांग्रेस शासनके दिनोंमें किया था।

मेरे विचारसे यह तभी संभव होगा, जब हम शासनकी मौजूदा पद्धतिके बुनियादी विचारको ही बदल दें। हम जानते हैं कि आजकी पद्धतिमें केन्द्रकी व्यवस्थापिका सभामें अेक ही पार्टीके नेता काम करते हैं, जिन्हें नीतियाँ निर्धारित करने और अुनपर अमल करनेका अधिकार दिया गया है। हालाँकि वे अुसूलकी दृष्टिसे धारासभाके प्रति जिम्मेदार हैं, फिर भी व्यवहारमें कमसे कम धारासभाकी अपनी पार्टीका तो नियंत्रण करनेकी ताकत रखते ही हैं। अगर अूपरके सुझाव पर अमल किया जाय, तो आजकी पद्धतिकी जगह व्यवस्थापिका सभामें नामजद मंत्री रखनेकी पद्धति अख्तियार करना जरूरी होगा। अुन्हें नीति निर्धारण करनेका कुछ भी अधिकार न होगा और अुठाये हुअे कदमकी हार होनेपर अिस्तीफे नहीं पेश करने पड़ेंगे। वे तो सिर्फ धारासभा द्वारा बताअी हुअी नीतिको अमलमें लानेके फर्ज़से बँधे होंगे। मैं समझता हूँ कि स्विटज़रलैण्डका विधान कुछ अिसी तरहका है। अगर विधान-सभा फिरसे विधानके सारे प्रश्नों-पर चर्चा न करे, तो अिस विषयमें अब कोअी फेरफार नहीं किया जा सकता। लेकिन अगर हम आजकी पद्धतिको बदलने लायक फेरफार विधानमें कर दें, तो भी हमें यह याद रखना चाहिये कि अब हाअी कमाण्डके मेम्बर तब तक मंत्रियोंपर नियंत्रण नहीं रख सकते, जब तक वे खुद धारासभाओंके मेम्बर न बन जायँ। यह नयी हालत कुछ अिस तरहकी होगी: पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाअी पटेलको क्रमसे केन्द्रीय धारासभाके नेता और अुप-नेता बनना होगा और मंत्रिमण्डलमें दूसरे योग्य कांग्रेस-जनोंको रखना होगा, जो अुसूल और अमल दोनोंमें न सिर्फ अुनकी सलाह मानेंगे बल्कि अुनकी आज्ञासे काम करेंगे। देशका शासन गवर्नर जनरलके नाम पर चलेगा, जो अपनी केबिनेटकी सलाहसे काम करेगा। और यह केबिनेट बहुमतवाली पार्टीके लीडर और अुसकी वर्किंग कमेटीके द्वारा चुनी जायगी और कदम कदम पर अुसके आदेशसे काम करेगी!

मेरा विश्वास है कि अैसा करनेसे आजकी हालत बिगड़ेगी ही, अुसमें सुधार तो जरा भी नहीं होगा। औपनिवेशिक स्वराज (डोमिनियन स्टेटस) पानेसे देशकी हालतमें जो परिवर्तन हुआ है, अुसमें यह जरूरी है कि अुसूल और अमल दोनोंकी दृष्टिसे शासनकी सत्ता देशके चोटीके जनप्रिय नेताओंके हाथमें रहे। मंत्री लोग कितने ही योग्य और अनुभवी क्यों न हों, लेकिन अगर अुसूल और व्यवहारमें अुनकी केबिनेट पर अैसे लोगोंका नियंत्रण है, जो अुसूलकी दृष्टिसे या तो केबिनेटके मातहत हैं या अुससे बिलकुल बाहर हैं, तो भीतरी और विदेशी मामलोंमें अुनकी वह सत्ता और प्रभाव नहीं रहेगा, जो आज पंडित नेहरू, सरदार पटेल या दूसरे मंत्रियोंका है। और अूँचे पदोंपर काम करनेवाले लेकिन बहुत अूँचे अुसूलोंको न माननेवाले व्यक्तियोंके हाअी कमाण्डके नियंत्रणसे बाहर हो जानेकी संभावना हमेशा बनी रहेगी। अिसलिअे मैं सोचता हूँ कि देशके सच्चे नेताओंको शासनतंत्रमें बनाये रखकर ही अिस समस्याका कोअी हल खोजना चाहिये।

अिसलिअे हमें सोचना चाहिये कि अिस मकसदको ध्यानमें रख कर कांग्रेस अपने आपको कैसे सुधार सकती है। मैंने अपने पिछले लेखोंमें कांग्रेस और देशके शासनको शुद्ध और निर्दोष बनानेके प्रारंभिक अुपाय बता दिये हैं। अुन्हें काममें लेनेके बाद कांग्रेसको पूँजीवाद, समाजवाद, गांधीवाद, साम्यवाद वगैरा विचारधाराओंसे कोअी सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये। साथ ही, अुसे कौमवाद, प्रान्तवाद, संस्कृतिवाद, सम्बन्धियोंके साथ पक्षपात करनेका वाद, और अवसरवाद जैसी अमलमें लायी जानेवाली विचारधाराओंसे भी कोअी नाता नहीं रखना चाहिये। पहले जिन वादों — पूँजीवाद, समाजवाद, गांधीवाद वगैराका जिक्र किया गया है, अुनमेंसे किसीको अपनानेके बजाय कांग्रेसको हिम्मतके साथ जनतासे यह कह देना चाहिये कि अुसके सामने आज जो बहुत-सी समस्यायें खड़ी हैं, अुन्हें देखते हुअे वह किसी खास वादमें अपना विश्वास जाहिर नहीं कर सकती। वह जनतासे कहेगी कि अगर अिनमेंसे हर वादके अुसूलोंकी फेहरिस्तें बनाअी जायँ, तो पता चलेगा कि आजके कोअी भी दो कांग्रेसजन किसी फेहरिस्तके सारे मुद्दोंको अेकमतसे मंजूर नहीं करते या अुनके किसी खास मुद्देपर अेकसा जोर नहीं देते। अगर वह सिर्फ अैसी ही बात मंजूर करे जिसे ज्यादासे ज्यादा कांग्रेसजन मानें, तो अुस बातकी कोअी कीमत नहीं रह जायगी। अिसलिअे सिर्फ यही कहा जा सकता है कि सारे कांग्रेसजन कुछ मोटे मोटे अुसूलोंकी तरफ अेक मतसे झुकते हैं। (अिन्हें निश्चित रूपसे लिख लिया जाना चाहिये।) कांग्रेस वह मकसद बता सकती है, जिसे वह हासिल करना चाहती है। लेकिन वह कह सकती है कि अुसूलोंके अमलमें हरअेकको सन्तोष देना कठिन है। अिसलिअे सुधरी हुअी कांग्रेसको किसी खास वाद या विचारधाराको अुसूलन मंजूर नहीं करना चाहिये। लोग यह कह सकते हैं कि कांग्रेस किसी निश्चित नीतिके आधार पर काम नहीं करती — वह किधर भी बह जाती है। लेकिन यह खतरा अुठाकर भी अुसे कह देना चाहिये कि वह खुले दिमागसे, मौजूदा हालतोंको ध्यानमें रखकर, अपने सामनेकी हर समस्याकी जाँच करेगी और अैसा फैसला करनेकी कोशिश करेगी, जो अुसे आजकी हालतोंमें सर्वथा अुचित मालूम होगा। अिसका मतलब यह नहीं कि समस्याओंके हल खोजते समय कांग्रेसके सामने बहुत दूरके मकसद नहीं होंगे। लेकिन संभव है अुन मकसदों तक पहुँचनेका जो रास्ता कांग्रेस अख्तियार करे, वह अितना क्रान्तिकारी और जल्दीका न हो, जो किसी खास विचार-धाराके हिमायतियोंको सन्तोष दे सके। कांग्रेसको अैसे ढंगसे काम करना चाहिये, जिससे अुसे दुनियाको यह दिखानेका सन्तोष मिले कि जिस तरहसे वह लोगोंके जीवन और शान्तिमें बहुत बड़ी गड़बड़ी पैदा किये बिना किसी नीतिपर अमल कर रही है, वैसा कोअी भी पार्टी नहीं कर सकती।

जहाँ तक कौमवाद, प्रान्तवाद वगैरा अमलमें लायी जानेवाली विचारधाराओंका सम्बन्ध है, मैं कहूँगा कि अगर कांग्रेसके लिअे कोअी विशेष वाद अपनाना जरूरी हो, तो वह कौमवाद, प्रान्तवाद, संस्कृतिवाद, सम्बन्धियोंके साथ पक्षपात करनेका वाद, अवसरवाद, वगैराको न माननेका ही वाद होना चाहिये। यह वाद पूँजीवाद, गांधीवाद वगैरासे ज्यादा महत्व रखता है। जाति, धर्म, नसल, भाषा, सम्प्रदाय, वतन वगैराका भेद छोड़कर हरअेक हिन्दुस्तानीकी अेक-सी अिज्जत करना, सबके साथ साफ और अीमानदारी भरा बरताव रखना, शासनको निर्दोष और जनताके लिअे ज्यादासे ज्यादा सुविधाजनक बनानेमें खूबसे खूब सावधानी रखना, सब तरहके पक्षपातसे दूर रहना और अिसी तरहकी

www.vinoba.in

दूसरी आदर्श बातें कांग्रेसका मूलमंत्र या अेक मात्र मकसद, आदर्श और तरीका होना चाहिये। अगर अिस पर अीमानदारीसे अमल किया जाय और अिस मकसदको हासिल करनेकी पूरी पूरी कोशिश की जाय, तो कांग्रेसके मुट्ठीभर मेम्बर होने पर भी वह पहलेकी तरह जनप्रिय और अुपयोगी बनी रहेगी।

साधारण लोग, फिर वे सियासी निगाहसे कितने ही जाग्रत क्यों न दिखाअी दें, कभी किसी वाद विशेषके पक्के अनुयायी नहीं होते। किसी वादके नारे, जो व्यापक अर्धसत्य ही होते हैं, लोगोंको गोल-माल रूपमें जो कुछ समझा देते हैं, अुससे ज्यादा वे शायद ही अुसके बारेमें कुछ समझते हैं। हम जानते हैं कि भोलीभाली मुस्लिम जनता बिना समझे-बूझे पाकिस्तानके और हिन्दुस्तानी मुसलमानोंके लिअे अलग वतनके नारेके साथ कैसी बह गयी, जिसने मुसलमानों और दूसरे हिन्दुस्तानियोंको बहुत बड़ा नुकसान पहुँचाया। आज भी हम अिस मुसीबतसे छूट नहीं सके हैं। अगर कांग्रेसको जनताकी सेवा करनी है, तो अुसे अैसे नारोंकी कीमत परसे लोगोंका विश्वास हटाना होगा। कांग्रेस खुद भी अपना कोअी नारा लोगोंके सामने न रख कर बुद्धिमानीका काम करेगी। अिसके बजाय अुसे अैसे नारों पर बिना समझे-बूझे विश्वास कर लेनेकी लोगोंकी आदतको छुड़ानेकी भरसक कोशिश करनी चाहिये।

अिस तरह कांग्रेस शासनतंत्रसे सम्बन्ध रखनेवाली प्रवृत्तियोंमें भाग लेनेवाले और धारासभाओंसे बाहर रहनेवाले साथियों और कार्यकर्ताओंकी संस्था बन सकती है। ये सब आत्म त्याग और अीमानदारीकी भावनासे पार्लियामेण्टरी प्रवृत्तियोंमें भाग लेते हुअे और सरकारी या गैरसरकारी तौर पर जिम्मेदारी भरे सार्वजनिक काम करते हुअे राष्ट्रकी सेवा करनेके वचनसे बँधे होंगे। ये काम वे जनताको अीमानदारी, न्याय और दूसरे अूँचे गुणोंके मीठे फल चखानेकी दृष्टिसे करेंगे। अगर किसी प्रतिज्ञाकी जरूरत हो, तो मेम्बरोंसे अूपरके ढंगकी प्रतिज्ञा कराअी जा सकती है।

जरूरी है कि अैसी कांग्रेसकी सदस्यता फार्मपर दस्तखत करके चार आने देनेवाले हर आदमीके लिअे खुली नहीं होगी। वह अेक सीमित संस्था होगी। अुसके मेम्बर बननेकी शर्तें बहुत कड़ी होंगी, ताकि अूँचे अुसूलों, अूँचे चरित्र, अूँची योग्यता और निस्स्वार्थ सेवाकी भावनावाले लोग ही अुसके मेम्बर बन सकें। वह जीवनके हर क्षेत्रमें काम करनेवाले और साधारण पढ़े लिखे आदमियोंको भी अपने मेम्बर बनायेगी, बशर्ते वे अिस कसौटी पर खरे अुतरें। वह मेम्बर बनाते समय काफी सख्तीसे काम करेगी, ताकि धन, विद्या या धोखेका अुसपर असर न पड़ सके।

चाहे वह ओहदोंपर हो या बाहर हो, कांग्रेस जीवनके हर क्षेत्रसे सम्बन्ध रखनेवाली राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय, शहरी और देहाती समस्याओंका अध्ययन करेगी और लोगोंको अुनके अध्ययन, छानबीन और खोज करनेकी प्रेरणा देगी। वह न तो किसी विशेष विचारधाराको माननेवाले दलोंके साथ अपनेको मिलायेगी, न अुनके अध्ययन और मददका फायदा अुठानेसे अिन्कार करेगी।

अैसी कांग्रेस जनताके सामने अपनेको न तो गांधीवादी जाहिर करेगी, न भीतर भीतर अगांधीवादी तरीके अख्तियार करेगी। अखिल भारत चरखा-संघ, अखिल भारत ग्रामोद्योग-संघ वगैरा जैसी रचनात्मक संस्थाओंके तरफ अुसका वही रुख होगा, जो गांधीजी या पुरानी कांग्रेससे सम्बन्ध न रखनेवाली किसी दूसरी संस्थाके प्रति होगा। वह पार्लियामेण्टरी प्रवृत्तियों द्वारा लोगोंकी सेवा करना चाहेगी, और (ओहदों पर रहते हुअे) सरकारकी नीतियाँ समझाकर और अिस बातका ध्यान रखकर कि आम जनताके भलेकी दृष्टिसे अुन नीतियों पर अमल किया जाय, वह लोगोंके पास पहुँचनेकी कोशिश करेगी। अगर सचाअी, अीमानदारी, गैरतरफदारी, सभ्यता और आदर्श जीवन कांग्रेसजनके विशेष गुण बन जायँ, तो कांग्रेसकी लोगोंको हमेशा जरूरत रहेगी।

वर्धा, २४-७-'४८

(अंग्रेजीसे) **किशोरलाल मशरूवाला**

www.vinoba.in

भूलका अिकरार

मेरे 'बुरे साधन' नामक लेखका अुल्लेख करते हुअे अुसमेंकी दो गलतियोंकी ओर मेरा ध्यान खींचा गया है। मुझे बताया गया है कि वह सर्क्यूलर, जिसका बहुतसा हिस्सा मैंने प्रकाशित किया है, बिहार सरकार या किसी अधिकारवाली संस्थाने नहीं निकाला था; वह तो अेक नामधारी 'सरकारी अधिकारियों और गैरसरकारी लोगोंकी संयुक्त कमेटी' ने जारी किया था। बिहारके माल मंत्री श्री कृष्णवल्लभ सहाय मुझे लिखते हैं कि सरकारकी जानकारीके अनुसार अैसी कोअी भी संस्था असलमें मौजूद नहीं है।

दूसरे, मानभूम जिला कांग्रेस समितिके जिस प्रस्तावका मैंने अपने लेखमें जिक्र किया है, वह अुस संस्थामें पास नहीं हुआ, बल्कि ५५ : ४३ वोटोंसे गिरा दिया गया। अिसका नतीजा यह हुआ कि जिला कांग्रेस समितिमेंसे ३८ मेम्बरोंने, जिनमें सभापति और मंत्री भी शरीक हैं, राजीनामे दे दिये।

जबसे वह लेख लिखा गया है, तबसे मानभूम और पश्चिम बंगालमें बिहारके सरहदी हिस्सोंको बंगालमें मिलानेकी हलचलके प्रचारकोंने जो तरीके काममें लिये हैं, अुनकी ओर मेरा ध्यान खींचा गया है। यदि मुझे मिली हुअी खबरें सही हैं, (और अुनपर अविश्वास करनेका मुझे कोअी कारण नहीं दिखाअी देता) तो मुझे कहना होगा कि यह हलचल अुभाड़नेवाली और लोगोंको हिंसाके लिअे तैयार करनेवाली है। वह सर्क्यूलर, जिसे प्रकाशित करनेकी जिम्मेदारी मेरी है, यदि जालसाजीभरा है, तब तो जिन बंगाली मित्रोंने वह मुझे भेजा, अुन्होंने मेरे साथ बड़ाभारी धोखा किया है। चूँकि जिन मित्रसे वह मुझे मिला, वे मेरे साथ धोखा नहीं कर सकते, अिसलिअे मुझे डर है कि खुद अुनके साथ भी अिस सर्क्यूलरके देनेवालोंने धोखा किया है, और अुन मित्रने जल्दीमें बिना सोचे-समझे अुसे मेरे पास भेज दिया है। बिहारके मानभूम और सरहदके हिस्सोंको पश्चिम बंगालमें मिलानेकी हलचलके प्रचारकोंने यदि मेरे लेखको अपने प्रचारका साधन बनाया हो, तो अिसमें कोअी आश्चर्य नहीं। लेकिन अैसा करके अुन्होंने अपने खुदके अुद्देश्यकी सेवा करनेके बजाय अुसकी कुसेवा ही की है। कारण, यदि मैं सख्तीसे टीका कर सकता हूँ, तो खुले तौर पर माफी भी माँग सकता हूँ और बगैर संकोचके भूल सुधार करनेके लिअे सब कुछ कर सकता हूँ।

अूपरका हिस्सा लिखा जानेके बाद मेरे पास बिहारके शिक्षा-मंत्री, श्री बद्रीनाथजीका अेक बड़ासा खत आया है, जिसमें अिस विषयका, जिसके बारेमें शिकायत पेश हुअी है, खुलासा किया गया है, और अिन सूबोंमें भाषाके सवालके बारेमें बिहार सरकारने जो नीति अख्तियार की है, वह साफ साफ बयान की गयी है। मैं अिस पत्रको करीब करीब साराका सारा दूसरी जगह दे रहा हूँ। अिसमें से मैंने अुन हिस्सोंको छोड़ दिया है, जो सरकारकी नीतिकी सफाअीके लिअे बिलकुल जरूरी नहीं है। जो नीति अख्तियार की गयी है, वह यदि पूरी तरह अमलमें लायी गयी, तो बड़ी अच्छी जान पड़ती है। लेकिन यदि अिससे भी ज्यादा कुछ करना हो, तो स्थितिको ज्यादा सुधारनेके लिअे आज जिस तरहका प्रचार किया जा रहा है, अुससे अच्छे तरीके काममें लिये जा सकते हैं।

मैं फिरसे दोहरा कर कहता हूँ कि जो भी पक्ष बुरे साधन अिस्तेमाल करता है, चाहे वह अपना अुद्देश्य पानेमें कामयाब भी हो जाय, वह मानभूमके लोगोंको सुखी करनेमें कामयाब नहीं हो सकेगा, न वह दो सूबोंके लोगोंमें अच्छे ताल्लुकात कायम कर सकेगा। वे सिर्फ लड़ाअी और फूटके बीज ही बोयेंगे। मैं नहीं समझता कि यह मामला शान्त और विशुद्ध तरीकोंसे निबटा ही नहीं जा सकता।

नअी दिल्ली, ३०-७-'४८

(अंग्रेजीसे) **किशोरलाल मशरूवाला**

प्रेमपन्थ

(८)

शराबका बुरा व्यसन

(क)

द्राक्षासव वगैरा नशीली चीजोंके अुपयोगसे शरीर और मन दोनोंको नुकसान होता है। अितना ही नहीं, अुससे आदमीका नैतिक ज्ञान मर जाता है और अपने आप पर काबू रखनेकी सारी ताकत खतम हो जाती है।

(ख)

अफीम वगैरा नशीले पदार्थ और शराब ये शैतानके दो हाथ हैं।

(ग)

भूखों मरनेवाले स्त्री-पुरुष छोटी छोटी चोरियाँ करते हैं और अुन-पर मुकदमा चलता और अुन्हें सजा होती है। अिस चोरीके बनिस्बत हिन्दमें शराब पीनेको मैं ज्यादा बड़ा कसूर मानता हूँ। बड़ी नाराजीसे और प्रेमधर्मका पूरा साक्षात्कार न होनेसे मजबूर बनकर मैं गुनहगारको सजा देनेकी बिचली पद्धतिको बर्दाश्त करता हूँ।

और जब तक मैं अुसे बर्दाश्त करता हूँ, तब तक शराब बनाने-वालोंको और बार बार चेताने पर भी हठ करके शराब पीनेवालोंको सजा देनेकी मुझे हिमायत करनी चाहिये। मेरे लड़के अगर आगमें या गहरे पानीमें जायँ, तो मैं अुन्हें जबरन रोकनेसे हिचकिचाता नहीं। शराब पीना जलती हुअी आगमें या भरपूर नदीमें कूदनेसे भी ज्यादा भयानक है। आग या पानी सिर्फ शरीरका ही नाश करते हैं। लेकिन शराब तो शरीर और आत्मा दोनोंको बरबाद कर देती है।

(घ)

हिन्दमें जबरन शराब न छुड़ाअी जाय; जो शराब पीना चाहते हैं अुन्हें सुभीता कर देना चाहिये — अैसी अूपरसे अच्छी लगनेवाली दलीलके भुलावेमें आप न आयेंगे। लोगोंकी बुरी बातोंके लिअे राज सुभीता नहीं करेगा। वेश्यागृहोंको हम परवाने नहीं देते। चोरको चोरी करनेकी सहूलियत हम नहीं देते। चोरी और शायद वेश्यागमनसे भी ज्यादा मैं शराब पीनेको बुरा समझता हूँ। शराबका नशा पहली दोनों बुराअियाँ पैदा करता है।

(ङ)

हमारे देशके हवापानीमें शराबकी बिलकुल जरूरत नहीं है। शराबकी गुलाम बनी हुअी प्रजाका नाश ही होता है। ... यादव लोग शराबके कारण ही कट मरे। रोमके पतनमें भी शराबका हाथ रहा है। अिसलिअे अगर सादी और मामूली जिन्दगी बितानी हो, तो समय रहते अिस बुराअीको बन्द कीजिये।

(च)

शराबीपन और शराबबन्दीके बीच किसी तरहके समझौतेकी कोअी गुंजायश नहीं है। सुखी आदमी थोड़ी मात्रामें शराब पीनेका भले ढोंग करें, लेकिन मजदूरके लिअे यह नामुमकिन है।

(छ)

अगर कोअी मुझे सारे हिन्दुस्तानका अेक घण्टेके लिअे राजा बना दे, तो सबसे पहले मैं मुआवजा दिये बिना शराबकी सारी दुकानें बन्द करा दूँ। गुजरातमें दिखाअी देते हैं, वैसे सारे ताड़ीके पेड़ कटवा डालूँ और कारखानेदारोंको अिस बातके लिअे मजबूर करूँ कि वे अपने मजदूरोंके लिअे अिन्सानके रहने-बसने योग्य हालतें पैदा करें और अुनके लिअे अैसे आराम-घर खोलें, जहाँ अुन्हें खाने पीनेकी निर्दोष चीजें और मनबहलावके निर्दोष साधन मिल सकें।

(अंग्रेजीसे)

सवाल-जवाब

अूंच और नीच धंधे

सवाल — जयपुर राज्यके बलाअी (बुनकर) कपड़ा बुननेके अपने मुख्य कामके साथ साथ जूते और चड़सकी मरम्मतका तथा मरे ढोरोंको अुठानेका काम करते रहे हैं। चूँकि हालमें अुनमें नयी जाग्रति आयी है, और चमड़ेका तथा ढोर अुठानेका काम समाजने नीचे दरजेका समझ रखा है, अिस कारणसे अुन लोगोंकी बिरादरीने अब निश्चय किया है कि ये दोनों काम अब कोअी बलाअी न करे। अिससे किसानों, राजपूतों, तथा बनिये, ब्राह्मणोंमें बड़ी हलचल मच गयी है। बलाअियोंको चमड़ेका काम करनेके लिअे मजबूर किया जा रहा है। अगर नहीं करते, तो अुनको मारा-पीटा भी जाता है। और कहीं कहीं तो बलाअियोंको गाँव छोड़कर भी जाना पड़ा है। अैसी स्थितिमें बलाअी लोग क्या करें? बिरादरीके किये हुअे निश्चयपर कायम रहें या सवर्ण लोगोंके दबावको मानकर फिरसे यह काम करने लगें?

जवाब — अिसमें सवर्णों और बलाअियों दोनोंको समझने-समझानेकी बात है। किसानी, दुकानदारी, पूजा-पंडिताअी और कपड़े बुननेके पेशे अूँचे हैं और जूते सीने, ढोर अुठाने, पाखाने साफ करने वगैराके पेशे नीचे दरजेके हैं, और अुन्हें करनेवाले नीच हैं, ये खयाल अब निकल जाने चाहियें। लेकिन जब तक सवर्णोंमेंसे ये खयाल निकल नहीं जाते, तब तक बलाअी लोग जिस निश्चयपर आये हैं, अुसमें अचरजकी कोअी बात नहीं। अुनको यह काम करनेके लिअे मजबूर तो बिलकुल ही नहीं किया जा सकता। पुराने जमानेकी वर्ण-व्यवस्थामें अपना पीढ़ी-जात धंधा करनेका हर आदमीका फर्ज माना जाता था। सवर्णोंने वह धर्म बरसोंसे छोड़ दिया है। तब हर आदमीको अधिकार है कि आम तौरपर वह जिस पेशेको ठीक समझे, अुसे करे; जिसे ठीक न समझे, अुसे न करे। बलाअियोंको अिस कारणसे मारना पीटना या गाँव छोड़कर भाग जानेकी परिस्थितिमें डालना, सवर्णोंका साफ़ साफ़ अन्याय है, और लोक सेवकोंको अैसे समयपर बलाअियोंकी मददमें रहना चाहिये।

तब सवाल यह है कि अैसे काम किस तरह निबटाये जायँ? अिसके रचनात्मक अुपाय नीचे लिखे हैं:

१. अछूतपन अेकदम खतम कर दिया जाय। बलाअियोंके साथ, चमड़ेका काम करनेवालोंके साथ और ढोरोंको अुठानेवालोंके साथ अुसी तरहका व्यवहार हो, जैसा किसान, बनिये और ब्राह्मण आपसमें करते हैं। घर या दुकानके जिस हिस्से तक ब्राह्मणके घरमें बनिया और किसान, या बनियेके घरमें किसान और राजपूत जा और बैठ सकता है, अुस हिस्से तक अिन लोगोंको भी बुलाने और बैठानेका व्यवहार शुरू करना चाहिये।

२. ढोरके मरनेपर अुसके अुठानेमें लोकसेवक और ब्राह्मण, बनिये, किसान, राजपूत वगैरा सवर्णोंको भी हाथ बँटाना चाहिये। जिस तरह परिवारका अेक आदमी मरता है, तब अुसका शव अुठानेके लिअे अपनी बिरादरीके लोग और मित्र आते हैं, अिकट्ठा होते हैं, और अपनी अपनी रूढ़िके अनुसार अुसे जलाते या गाड़ते हैं, अुसी तरह ढोरको अुठानेका काम अेक सामाजिक काम है। अुसको ढोरके कब्रस्तान तक पहुँचानेका काम जिसका ढोर मरा हो अुसकी बिरादरी और मित्रोंका है। चूँकि मरे ढोरको जलाया या गाड़ा नहीं जाता, बल्कि अुसके चमड़े, हड्डी आदिका अुपयोग होता है और वह अेक पैसे कमानेकी चीज है, अिसलिअे अुस ढोरको अुठाने और ले जानेमें खास प्रकारकी हिफाजत और जानकारीकी जरूरत रहती है। अिसलिअे वह काम खास लोगोंका पेशा बना हुआ है। तब अुसमें अिन लोगोंकी मददकी भी जरूरत हो जाती है। यह मदद अुन्हें योग्य मेहनताना देने पर ही ली जा सकती है। और चूँकि वे लोग अेक तरहसे खास काम करनेवाले हैं, और अैसा काम कर देते हैं जिसे करनेकी न तो दूसरे लोगोंमें जानकारी है और न शरीरकी

www.vinoba.in

ताकत ही, अिसलिअे अुन्हें अैसे अिज्जतसे देखना चाहिये, जैसे पुलिसके या न्यायकचहरीके अफसरोंको, या स्कूल मास्टरोंको देखा जाता है । जब तक सवर्णोंकी मनोवृत्तिमें अिस तरहका फेरफार नहीं होता, तब तक ये झगड़े मिटेंगे तो नहीं, बल्कि बढ़ते जायेंगे; और अुसमेंसे अेक तरफसे या दोनों तरफसे हिंसा पैदा होनेका डर रहेगा ही ।

वर्धा, १२–७–'४८ **किशोरलाल मशरूवाला**

डर, पक्षपात और रिश्वत

मध्यप्रान्त और बरारके स्थानिक स्वराज्य विभागके मंत्री श्री द्वारकाप्रसाद मिश्रने २८ जूनको हुअी प्रान्तके कमिश्नरों और डिप्टी कमिश्नरोंकी कान्फरेन्समें जो भाषण दिया था, अुसमेंसे नीचेके हिस्से लिये गये हैं । हालाँकि ये बातें खास कर मध्यप्रान्तके बारेमें कही गयी हैं, फिर भी आम तौर पर वे दूसरे सब प्रान्तोंको भी लागू होती हैं :

डर

"प्रान्तके जिलोंसे अैसी खबरें मिला करती हैं कि धारा-सभाके मेम्बर और दूसरे कांग्रेसी अच्छी तरह शासन चलानेमें रुकावटें डालते हैं, . . . और ज्यादातर जिला अफसर अुनके दबावके सामने झुक जाते हैं । मुझसे बार बार यह कहा गया है कि अफसरोंमें यह मान्यता घर कर गयी है कि राजसत्ता कांग्रेसके हाथमें है, अिसलिअे हमें तकलीफसे बचनेके लिअे कांग्रेस-जनोंकी अुचित या अनुचित अिच्छाको मान कर काम करना चाहिये । अिसीमें हमारी खैरियत है । लेकिन मैं आपको बिलकुल साफ शब्दोंमें कह देना चाहता हूँ कि अफसरोंका यह रुख सही नहीं है । . . .

"आप सब प्रजाके सेवक माने जाते हैं और यह सच भी है । अिसलिअे ज्यादासे ज्यादा वफादारी और योग्यतासे प्रजाकी सेवा करना आपका फर्ज़ है । लेकिन यह जरूरी नहीं है कि किसीकी अनुचित माँगोंके सामने झुकनेके लिअे आप अपने फर्ज़का सीधा रास्ता छोड़ें — भले वह धारासभाका मेम्बर हो या और कोअी । . . .

पक्षपात

"कुछ कांग्रेसियोंके बारेमें मैंने यह भी सुना है कि वे अफसरोंके पास जाकर कहते हैं कि हमारा प्रधान मंत्री या अमुक मंत्रीके साथ गहरा सम्बन्ध है । अगर आप हमारा अितना निजी काम करा दें, तो हम आपकी तरक्की जरूर करा देंगे । मैं आपको साफ शब्दोंमें कह देना चाहता हूँ कि अैसी बातें करनेवाले सफेद झूठ बोलते हैं । सरकारको वचनमें बाँध लेनेका किसी कांग्रेसीको कोअी हक नहीं है, और अफसरोंकी तनखाह बढ़ाने वगैराके बारेमें हमारे फैसलों पर अैसे लोगोंका कोअी असर नहीं पड़ता । अिसलिअे, अैसी बातोंको कोअी महत्त्व नहीं दिया जाना चाहिये । . . .

"हरअेक जिलेमें बहुत-सी पार्टियाँ होती हैं और वे सब तरह तरहकी साजिशें करती हैं । यह कुदरती बात है कि स्वार्थी लोग आपके पास आयेंगे और अपना दृष्टिकोण या अपना महत्त्व बता कर आप पर असर डालनेकी कोशिश करेंगे । अैसे मामलोंमें बिलकुल निष्पक्ष रहकर न्याय करनेका आपका फर्ज़ है । न तो आपको अैसे लोगोंके साथ बुरा बरताव करना चाहिये, न अुनके सामने आपको झुकना चाहिये ।

रिश्वत

". . .देशके भलेके नाम पर मेरी आप सबसे यह अपील है कि आज सरकारी तंत्रमें जो जड़ता, अयोग्यता और रिश्वत-खोरी वगैराकी बुराअी फैली हुअी है, अुसे मिटानेमें आप हमारी मदद कीजिये । अिस लड़ाअीमें **आप लोग कांग्रेसियोंसे भी ज्यादा हमारी (सरकारकी) मदद कर सकते हैं** । अिसलिअे अिस लड़ाअीको आप अपनी लड़ाअी बनाअिये, और हम सब मिल कर अैसी कोशिश करें, जिससे हमारी शासन-व्यवस्था अितनी अूँची बन जाय कि हमें अुसका अभिमान हो । अितना ही नहीं, अुससे दूसरोंको भी अैसा करनेकी प्रेरणा मिले । आपके मातहत काम करनेवाले लोगों तक आप मेरा यह सन्देश पहुँचाअिये और अिस बातकी कोशिश कीजिये कि रिश्वतखोरी और अयोग्यताकी बुराअियाँ हमारे प्रान्तमें जड़से मिट जायँ ।"

श्री मिश्रजीकी यह बात पढ़कर सचमुच अचरज और दुःख होता है कि अुनकी सरकार शासन तंत्रमें घुसी हुअी रिश्वतखोरीकी बुराअीको जड़से मिटानेके काममें कांग्रेसियोंकी मदद पर पूरी तरह निर्भर नहीं कर सकती ।

वर्धा, ६–७–'४८ **किशोरलाल मशरूवाला**

(अंग्रेजीसे)

भाषा-शिक्षणके बारेमें बिहारकी नीति

११ जुलाअी १९४८के 'हरिजन' और अुसके हिन्दी संस्करण 'हरिजनसेवक'में 'बुरे साधन' नामका जो लेख छपा है, अुसकी तरफ मेरा ध्यान खींचा गया है । अुस लेखमें जिस विषय पर चर्चा की गयी है, अुससे मुझे बड़ा अचंभा हुआ । वह लेख आपकी कलमसे लिखा गया, यह और भी बड़े अचरजकी तथा, मुझे कहना चाहिये, दुःखकी बात है । अैसे मामलेमें, जिसे आपने अपने लेखका विषय बनाया है और जिसमें प्रान्तीय सरकार पर गंभीर आरोप लगाये गये हैं, मैं आपसे कथित अिलजामोंकी सचाअीका पता लगानेकी थोड़ी कोशिश करनेकी तो आशा जरूर रखता था । मुझे आपको यह बतानेकी जरूरत नहीं है कि आपने अनजानमें जो लेख लिखा, अुससे बिहार सरकारकी अिज्जतको बहुत बड़ा धक्का लगा है । अगर यह लेख किसी दूसरे पत्रमें छपा होता, तो हमने अुसकी परवाह नहीं की होती, और मेरा विश्वास है कि अुससे अितना बड़ा नुकसान भी नहीं होता । लेकिन 'हरिजन'में जो कुछ लिखा जाता है और वह भी आपकी कलमसे, अुसपर आम जनता बिना किसी हिचकिचाहटके विश्वास कर लेती है, और जनताका बहुत बड़ा हिस्सा तो अुसे वेदवाक्य-सा मानता है । मैं नहीं जानता कि आपके अिस लेखसे जनता पर जो असर पड़ा है, अुसे कैसे मिटाया जा सकता है । मैं यह पत्र आपको सच्ची हालत समझानेके लिअे ही लिख रहा हूँ । लेकिन मैं शुरूमें ही आपको बता दूँ कि जिस सर्क्यूलरको आपने अपनी टीकाका विषय बनाया है, वैसा कोअी सर्क्यूलर बिहार सरकारने नहीं निकाला; न अुसके किसी अफसरका अैसे किसी कामसे सम्बन्ध है, जिसे बहुत दूरके अर्थमें भी 'बुरा या गन्दा' कहा जा सके । फिर भी, हमारे बंगाली दोस्तोंका अेक हिस्सा अैसा है, जो अिस प्रान्तके कुछ हिस्सोंको पश्चिम बंगालमें मिलानेके जोशमें बिहार सरकार और अुसके अफसरोंको बदनाम करने पर तुला हुआ है और अिस मकसदको हासिल करनेके लिअे कमीनेसे कमीने तरीके अख्तियार करनेमें भी कोअी बुराअी नहीं मानता । झूठे सर्क्यूलरका प्रचार करना अिस बातकी सिर्फ अेक मिसाल है कि ये बंगाली दोस्त कितने नीचे गिर सकते हैं । यह सब कहते हुअे मुझे बड़ा दुःख होता है, लेकिन सचाअीको जाहिर करनेके लिअे कहना पड़ता है । सिर्फ अिन हिस्सोंका दौरा करनेवाला और यहाँकी मौजूदा हालतकी सावधानीसे जाँच करनेवाला निष्पक्ष आदमी ही हमारे अिन बंगाली दोस्तोंकी गन्दी चालबाजियों पर पूरा प्रकाश डाल सकता है । काश आपको यहाँकी सच्ची हालतका पूरा ज्ञान होता !

२. फिर भी मुझे अिस विषयमें ज्यादा लिखनेकी जरूरत नहीं है । मैं यहाँकी हालतके बारेमें असल हकीकतें संक्षेपमें देकर ही

www.vinoba.in

सन्तोष कर लेना चाहता हूँ । अिस प्रान्तका शिक्षा विभाग यहाँकी शिक्षा प्रणालीको फिरसे राष्ट्रीय ढंग पर संगठित करनेके लिअे बड़ा अुत्सुक है । और चूँकि नयी तालीमकी पद्धतिको सारे देशमें दाखिल करनेकी बात मंजूर कर ली गयी है, अिसलिअे बिहारके मौजूदा प्रायमरी स्कूलों और मिडिल स्कूलोंको नयी तालीमकी पद्धतिके अनुकूल बनानेकी भरसक कोशिश की जा रही है, ताकि नयी तालीमकी ट्रेनिंग लिये हुअे शिक्षक काफी तादादमें मिल जाने पर अिन स्कूलोंको आसानीसे बुनियादी स्कूलोंका रूप दिया जा सके । बेशक, शिक्षकों और पैसेकी सुविधाके अनुसार पूर्ण विकसित बुनियादी स्कूल भी जल्दीसे जल्दी अलगसे कायम किये जा रहे हैं । अिस मकसदको हासिल करनेकी दृष्टिसे मौजूदा प्रायमरी और मिडिल स्कूलोंका पाठ्यक्रम पूरी तरह नये सिरेसे बनाया गया है और अुसमें तरह तरहकी कलाओं और अुद्योगों — खासकर कताअी, बुनाअी, बागवानी वगैरा — की शिक्षा और अमली तालीमको स्थान दिया गया है । शिक्षाका माध्यम भी बदला जा रहा है, और प्रायमरी दरजोंमें, जहाँ तक संभव है, बच्चोंको अुनकी मातृ-भाषा द्वारा ही शिक्षा देनेका प्रबन्ध किया जा रहा है । अूँचे दरजोंके पाठ्यक्रमकी योजना अिस तरह बनाअी गयी है कि शिक्षाका माध्यम धीरे धीरे मातृभाषासे बदल कर हिन्दी हो जाय । क्योंकि हिन्दीको प्रान्तकी राजभाषा स्वीकार किया गया है — और संभव है कि हिन्द सरकार भी अुसे राजभाषा स्वीकार कर ले — और माध्यमिक शिक्षण और युनिवर्सिटीका शिक्षण हिन्दी माध्यम द्वारा ही दिया जानेवाला है । यह प्रबन्ध अिसलिअे किया गया है कि जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है, अुन्हें अूँची शिक्षाके सुभीतोंसे पूरा फायदा अुठानेका मौका मिले और वे सरकारी नौकरियोंमें बिना कठिनाअीके लिये जा सकें । अिस बयानमें कोअी सचाअी नहीं है कि बंगाली बच्चोंको अपनी मातृभाषा छोड़नेके लिअे मजबूर किया जा रहा है । अिसके खिलाफ, जिस तरह हिन्दी बोलनेवाले हिस्सोंमें हिन्दीके जरिये प्रायमरी शिक्षा दी जायगी, अुसी तरह बंगालियोंकी ज्यादा आबादीवाले हिस्सोंमें बंगला द्वारा प्रायमरी शिक्षा दी जायगी । अिसी तरह जिन हिस्सोंमें आदिवासियोंकी संथाली, मुंडारी, हो और अुराअूँ बोलियाँ बोली जाती हैं, वहाँ अुन्हींके जरिये शिक्षा दी जायगी । यह लोअर प्रायमरी दरजे तक चलेगा । अपर प्रायमरी स्कूलोंमें थोड़ी हिन्दी दाखिल की जायगी, लेकिन बच्चोंकी शिक्षाका माध्यम अुनकी अपनी भाषायें ही रहेंगी । मिडिल स्कूलोंमें भाषाको छोड़कर दूसरे विषयोंकी शिक्षा हिन्दीके जरिये दी जायगी । लेकिन बच्चे अपनी मातृभाषा पढ़ते रहेंगे । अुन्हें तब तक अैसा करने दिया जायगा, जब तक माध्यमिक और युनिवर्सिटी शिक्षणमें साहित्यके अध्ययनका प्रबन्ध नहीं हो जाता । अिसलिअे किसीसे जबरन अपनी मातृभाषा छुड़वानेका सवाल ही नहीं अुठता । अुलटे, आज तक जिन बच्चोंको अपनी मातृभाषा द्वारा प्रायमरी शिक्षा नहीं मिलती थी, अुन्हें भी मातृभाषा द्वारा पढ़ानेकी कोशिश की जा रही है । मिसालके लिअे, संथाली, मुंडारी, अुराअूँ और हो जातिके बच्चोंको अभी तक हिन्दी या बंगलाके जरिये ही पढ़ाया जाता था । अब पहली बार अुन्हें अपनी भाषामें प्रायमरी शिक्षा लेनेका मौका मिलेगा । बिहार सरकार आज बिहारमें जो कुछ कर रही है, वह दिल्लीमें हुअी शिक्षा परिषदके ठहरावोंसे ठीक मेल खाता है । मानभूमके हमारे बंगाली दोस्तोंको अेक ही बात खटक रही है । वे नहीं चाहते कि संथाली और हिन्दी बोलनेवाले बच्चोंको अुनकी मातृभाषाके जरिये शिक्षा दी जाय । कुछ अैसे कारणोंसे, जिनकी चर्चामें पड़ना मेरे लिअे यहाँ जरूरी नहीं है, मानभूमके सारे निवासियों पर बंगला माध्यम लाद दिया गया था । और हमारे बंगाली दोस्त हमेशा वही हालत बनाये रखना चाहते हैं । शायद आप नहीं जानते कि मानभूमके लगभग ७०–८० फी सदी लोग या तो हिन्दी बोलते हैं या फिर कोअी न कोअी आदिवासी भाषा — ज्यादातर संथाली — बोलते हैं । आज तक अिन सबको शुरूके दरजोंसे ही बंगला माध्यमके द्वारा शिक्षा लेनेके लिअे मजबूर किया गया था । नये पाठ्यक्रममें जिस तरह बंगालियोंको बंगला माध्यम द्वारा प्रायमरी शिक्षा लेनेकी छूट है और रहेगी, अुसी तरह दूसरी भाषायें बोलने-वालोंको अपनी अपनी भाषाके द्वारा प्रायमरी शिक्षा लेनेकी छूट रहेगी । जाहिर है कि हमारे कुछ बंगाली दोस्त, जिनमेंसे ज्यादातर बाहरसे आकर बसे हुअे हैं, अिस परिवर्तनको पसन्द नहीं करते । अिसीलिअे वे बिहार सरकारको बाहरकी दुनियामें बदनाम करनेके लिअे हर तरहके बुरे तरीके अख्तियार करनेकी कोशिश करते रहते हैं ।

३. बिहार सरकार हिन्दी न बोलनेवाले लोगोंके साथ ज्यादासे ज्यादा न्याय करनेकी कोशिश कर रही है । शिक्षा विभागको अिस बातका खयाल है कि हिन्दी न बोलनेवाले बच्चोंको हिन्दी पढ़ानेसे अुनपर थोड़ा बोझ पड़ेगा और अिसका अर्थ यह भी लगाया जा सकता है कि हिन्दी बोलनेवाले बच्चोंके मुकाबलेमें अुनके साथ अन्याय किया जा रहा है । शायद आप नहीं जानते, अिसी खयालसे शिक्षा विभाग अैसा बन्दोबस्त करनेकी कोशिश कर रहा है कि जिस तरह हिन्दी न बोलनेवाले बच्चे हिन्दी सीखें, अुसी तरह हिन्दी न बोलनेवाले हिस्सोंके हिन्दी-भाषी बच्चे बंगाली, संथाली वगैरा स्थानीय भाषायें सीखें । अिससे अलग अलग भाषायें बोलनेवालोंके बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध कायम करनेमें और अुनमें सद्भावना और सहानुभूति पैदा करनेमें मदद मिलेगी ।

* * *

५. मैंने अूपर केवल हकीकतें देनेकी कोशिश की है । यह लम्बा पत्र लिखनेके लिअे आप मुझे क्षमा करेंगे । लेकिन मैं अैसा करनेके लिअे मजबूर हो गया । क्योंकि सच्ची हालतको पूरी तरह समझनेके लिअे हकीकतें आपके सामने पेश करना जरूरी था ।

राँची, २३–७–'४८ **बद्रीनाथ वर्मा**
(अंग्रेजीसे) शिक्षा और सूचना मंत्री

"आशाकण"

चिड़ियोंको दाना मिले, शिशुको पयकी धार;
प्रभु सबकी चिन्ता करे, नाहक तू बेजार!
कोशिश अपना काम है, फल तो प्रभुके हाथ;
मन, क्यों तू चिन्ता करे, छोड़ मोहका साथ ।
जिसको दुनिया दुःख कहे, वह अीश्वरका प्यार;
पाप कटे, ऋण भी चुके, होवे बेड़ा पार ।
जीत, हार कुछ भी मिले, रखना अपनी आन;
डटा रहे निज वचन पर, नरकी यह पहिचान ।
मरुथलमें भी अुग सके मीठे पिंडखजूर;
निर्दय दिलमें भी दयाके अंकुर भरपूर!
वही साधु कहला सके, जो जाने पर-पीर;
जन हितमें समरत सदा, साधक वही सुधीर ।
जैसा तुम चाहो करें सब तुमसे व्यवहार;
वैसा ही व्यवहार तुम करो सभीसे यार ।

('अमर आशा'से) **श्रीमन्नारायण अग्रवाल**

विषय-सूची

		पृष्ठ
हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी ही है	... अमृतलाल नाणावटी	१९७
रचनात्मक काम करनेवालोंकी संस्थायें	... किशोरलाल मशरूवाला	१९८
कांग्रेसका सुधार	... किशोरलाल मशरूवाला	२००
भूलका अिकरार	... किशोरलाल मशरूवाला	२०१
प्रेमपन्थ — ८	... गांधीजी	२०२
सवाल-जवाब	... किशोरलाल मशरूवाला	२०२
डर, पक्षपात और रिश्वत	... किशोरलाल मशरूवाला	२०३
भाषा-शिक्षणके बारेमें बिहारकी नीति	... बद्रीनाथ वर्मा	२०३
टिप्पणी:		
"आशाकण"	... श्रीमन्नारायण अग्रवाल	२०४

www.vinoba.in